स्वप्ना बर्मन

स्वप्ना बर्मन भारतीय हेपताथलाइट है। हेपताथलाइट में खिलाडी को सात खेल पूरे करने होते है - 100 मीटर बाधा दौड़, ऊंची कूद, शॉट पुट, 200 मीटर स्प्रिंट, लंबी कूद, भाला फेंक और 800 मीटर दौड़।

स्वप्ना बर्मन बहोत ही गरीब घर से है। उनके पिता एक रिक्शा चालक थे और माँ चाय बागान में काम करती है। वह एक झोपडी में रहते थे, जिसकी दीवारें नहीं है। घर में खाने की भी तकलीफ होती थी। स्वप्ना बारमन के पैरों में ५ के बजाइये ६ उँगलियाँ है, इस वजह से साधारण जूते में उन्हें तकलीफ होती है पर चौड़े जूते खरीदने के पैसे नहीं थे।

इन मुश्किलों के बावजूद, वह भारत की पहली महिला है जिसने 2018 में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता। 2019 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वप्ना बर्मन अपनी कामयाबी से हमे सिखाती है की अगर लगन हो, तो हम अपनी मंज़िल पा सकते है। स्वप्ना बर्मन हर लड़की के लिए एक प्रेरणा है।